REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य)
एस .बी .टीमहाविद्यालय ., जिला बिलासपुर (.ग.छ)

सारांश:

भारत में जनजातीय समुदाय मुख्यधारा के समाज के साथ बढ़ती अंतःक्रिया, विकासात्मक हस्तक्षेपों, शिक्षा के विस्तार तथा आर्थिक रूपांतरण के कारण धीरे-धीरे किंतु महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं। यह शोध-पत्र छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन करता है, जिसमें आँकड़ों और प्रवृत्तियों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, शिक्षा, सांस्कृतिक प्रथाओं, पारिवारिक संगठन तथा पारंपरिक संस्थाओं में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि विकास कार्यक्रमों और आधुनिकीकरण ने जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अवसरों तक पहुँच में सुधार किया है, वहीं दूसरी ओर इससे पारंपरिक रीति-रिवाजों का क्षरण, सामुदायिक एकजुटता का कमजोर होना तथा सांस्कृतिक पहचान में परिवर्तन भी हुआ है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि बिलासपुर की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन क्रमिक और असमान है, जिसमें अचानक परिवर्तन के बजाय पारंपरिक प्रथाओं और उभरते आधुनिक प्रभावों का सहअस्तित्व दिखाई देता है। शोध-पत्र सतत सामाजिक परिवर्तन सुनिश्चित करने हेतु सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और समावेशी विकास दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देता है, ताकि जनजातीय पहचान से समझौता किए बिना प्रगति को बढ़ावा दिया जा सके।

मुख्य शब्द: जनजातीय समुदाय, सामाजिक परिवर्तन, बिलासपुर ज़िला, आधुनिकीकरण, संस्कृति, विकास.

प्रस्तावना:

सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर और गतिशील प्रक्रिया है, जो सभी मानव समाजों को प्रभावित करती है, जिनमें वे जनजातीय समुदाय भी शामिल हैं जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी है। भारत में जनजातीय समाज तेजी से आधुनिकीकरण, विकास, शिक्षा, नगरीकरण और राज्य हस्तक्षेप जैसी शक्तियों के संपर्क में आ रहे हैं, जिनके परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक जीवन रूपांतरित हो रहे हैं। ये परिवर्तन न तो समान हैं और न ही अचानक; बल्कि व्यापक समाज के साथ सतत अंतःक्रिया के माध्यम से क्रमिक रूप से घटित होते हैं।

छत्तीसगढ़ का बिलासपुर ज़िला गोंड, बैगा, कंवर, उरांव तथा अन्य छोटे जनजातीय समूहों का निवास क्षेत्र है। ऐतिहासिक रूप से इन समुदायों की विशेषताएँ सघन सामाजिक संगठन, संसाधनों का सामूहिक स्वामित्व, आत्मनिर्भर आजीविका, सुदृढ़ कुटुंबीय एवं कबीलाई संरचनाएँ, परंपरागत नियम-कानून तथा वनों और प्राकृतिक संसाधनों से गहरा संबंध रही हैं। किंतु बीते कुछ दशकों में विकास गतिविधियों

के विस्तार, अवसंरचना के विकास, शिक्षा तक पहुँच तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन ने जनजातीय समुदायों को मुख्यधारा के समाज के अधिक निकट ला दिया है।

बिलासपुर ज़िले में सड़कों, बाज़ारों, शैक्षणिक संस्थानों और प्रशासनिक संरचनाओं के विस्तार से जनजातीय और गैर-जनजातीय आबादी के बीच आवागमन और संपर्क में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप शिकार, संग्रहण और स्थानांतरित कृषि जैसी पारंपरिक आर्थिक गतिविधियाँ धीरे-धीरे घटती गई हैं और उनके स्थान पर स्थायी कृषि, मज़दूरी तथा नकद अर्थव्यवस्था में सहभागिता बढ़ी है। आधुनिक शिक्षा, जनसंचार माध्यमों और राजनीतिक प्रक्रियाओं के संपर्क ने जनजातीय युवाओं के मूल्यों, आकांक्षाओं और सामाजिक व्यवहार में भी परिवर्तन उत्पन्न किया है।

यह शोध-पत्र उपलब्ध आँकड़ों और प्रवृत्तियों के आधार पर बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। इसमें सामाजिक संरचना, पारिवारिक संगठन, आर्थिक जीवन, शिक्षा, सांस्कृतिक प्रथाओं और पारंपरिक संस्थाओं में आए परिवर्तनों पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन आयामों के अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि जनजातीय समुदाय सामाजिक परिवर्तन के साथ किस प्रकार अनुकूलन कर रहे हैं तथा यह प्रक्रिया सांस्कृतिक क्षरण, रूपांतरण अथवा परंपरा और आधुनिकता के संतुलित सहअस्तित्व का संकेत देती है। यह अध्ययन जनजातीय विकास की व्यापक समझ तथा ऐसी समावेशी नीतियों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है, जो सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करें।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१) बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों की पारंपरिक सामाजिक संरचना का अध्ययन करना।
२) जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारकों का परीक्षण करना।
३) शिक्षा, व्यवसाय तथा आर्थिक जीवन में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
४) पारिवारिक संरचना, रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं में आए रूपांतरणों का अध्ययन करना।
५) जनजातीय पहचान और सामाजिक एकजुटता पर विकास एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव का आकलन करना।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-अभिकल्प को अपनाता है। शोध मुख्यतः जनगणना प्रतिवेदन, ज़िला सांख्यिकी पुस्तिकाएँ, सरकारी प्रकाशन तथा जनजातीय अध्ययनों से प्राप्त द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। शहरीकरण एवं विकास से प्रभावित जनजातीय क्षेत्रों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया है। उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण तुलनात्मक, प्रवृत्ति-आधारित तथा समाजशास्त्रीय व्याख्या विधियों द्वारा किया गया है, ताकि सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में आए परिवर्तनों को समझा जा सके।

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन:

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों ने ऐतिहासिक रूप से सामुदायिक जीवन, कुटुंबीय संबंधों, परंपरागत नियम-कानूनों तथा वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निकट निर्भरता पर आधारित विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रणालियाँ विकसित की हैं। गोंड, बैगा, कंवर और उरांव जैसी जनजातियाँ परंपरागत रूप से आत्मनिर्भर आजीविका, संसाधनों के सामूहिक स्वामित्व और सुदृढ़ सामाजिक एकजुटता का पालन करती रही हैं। किंतु बीते कुछ दशकों में, व्यापक समाज के साथ बढ़ते संपर्क, विकासात्मक गतिविधियों और आधुनिकीकरण की शक्तियों के कारण इन समुदायों में क्रमिक सामाजिक परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक शिक्षा का विस्तार रहा है। आवासीय विद्यालयों, छात्रावासों, छात्रवृत्तियों और साक्षरता कार्यक्रमों जैसी सरकारी पहलों ने जनजातीय बच्चों और युवाओं की शैक्षिक पहुँच में वृद्धि की है। शिक्षा के माध्यम से अधिकारों, स्वास्थ्य, रोज़गार और राजनीतिक सहभागिता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। साथ ही औपचारिक शिक्षा के संपर्क ने जनजातीय मूल्यों, आकांक्षाओं और दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक व्यवसायों और सामाजिक प्रथाओं के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है।

जनजातीय समुदायों के आर्थिक जीवन में भी उल्लेखनीय रूपांतरण हुआ है। जहाँ पहले आजीविका मुख्यतः कृषि, वन-उत्पादों, शिकार और संग्रहण पर आधारित थी, वहीं अब जनजातीय परिवार मज़दूरी, निर्माण कार्य, खनन-संबंधी गतिविधियों और सरकारी रोज़गार योजनाओं में अधिक सहभागिता करने लगे हैं। वन संसाधनों तक पहुँच पर प्रतिबंध, पर्यावरणीय क्षरण और बाज़ार एकीकरण के कारण पारंपरिक वन-आधारित आजीविकाओं पर निर्भरता कम हुई है। यद्यपि आर्थिक विविधीकरण से आय के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं, तथापि इससे असुरक्षा, अस्थिरता और नकद अर्थव्यवस्था पर निर्भरता भी बढ़ी है।

सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव पारिवारिक संरचना और सामाजिक संगठन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। रोज़गार, शिक्षा और प्रशासनिक बसावट के लिए प्रवासन के कारण पारंपरिक विस्तारित परिवार व्यवस्था धीरे-धीरे एकल परिवारों में परिवर्तित हो रही है। परिवारों में निर्णय-निर्माण का अधिकार युवा पीढ़ी की ओर स्थानांतरित हुआ है। महिलाओं की शिक्षा, मज़दूरी, और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी बढ़ी है, जिससे लैंगिक भूमिकाओं में क्रमिक परिवर्तन दिखाई देता है, यद्यपि पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंड अब भी सामाजिक संबंधों को प्रभावित करते हैं।

जनजातीय समुदायों का सांस्कृतिक जीवन भी सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित हुआ है। पारंपरिक पर्व-त्योहार, अनुष्ठान, लोकनृत्य और मौखिक परंपराएँ सामुदायिक सहभागिता में कमी और मुख्यधारा संस्कृति के प्रभाव के कारण दैनिक जीवन में घटती जा रही हैं। वस्त्र, खान-पान, भाषा-प्रयोग और धार्मिक आचरण में आए परिवर्तन गैर-जनजातीय समाज के साथ बढ़ती सांस्कृतिक अंतःक्रिया को दर्शाते हैं। इसके साथ ही, जनजातीय उत्सवों, स्थानीय संगठनों और सरकारी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रयास यह संकेत देते हैं कि परिवर्तन के बीच जनजातीय पहचान को संरक्षित रखने की चेतना भी विद्यमान है।

परंपरागत सामाजिक संस्थाएँ (जैसे जनजातीय पंचायतें, कबीलाई नेतृत्व और प्रथागत विवाद-निवारण प्रणालियाँ) औपचारिक कानूनी व्यवस्था और प्रशासनिक शासन के प्रभाव में कमजोर हुई हैं। वहीं, पंचायती राज संस्थाओं और निर्वाचन राजनीति में जनजातीय सहभागिता बढ़ी है, जिससे नए नेतृत्व और राजनीतिक जागरूकता का विकास हुआ है। इससे लोकतांत्रिक भागीदारी तो सुदृढ़ हुई है, परंतु उन पारंपरिक संस्थाओं का प्रभाव कम हुआ है जो पहले सामाजिक जीवन को नियंत्रित करती थीं।

समग्र रूप से, बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया क्रमिक, असमान और जटिल है। विकास पहलों, शिक्षा और आधुनिकीकरण ने बुनियादी सेवाओं तक पहुँच, जागरूकता और आर्थिक अवसरों का विस्तार किया है। साथ ही, इन परिवर्तनों के कारण सांस्कृतिक क्षरण, सामुदायिक एकजुटता में कमी और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं के समक्ष चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। अतः बिलासपुर की जनजातीय समाज-व्यवस्था को एक संक्रमणकालीन अवस्था के रूप में समझा जा सकता है, जहाँ पारंपरिक मूल्य और संस्थाएँ उभरते आधुनिक प्रभावों के साथ सहअस्तित्व में बनी हुई हैं, न कि पूर्णतः प्रतिस्थापित हो गई हैं।

सैद्धांतिक रूपरेखा:

सामाजिक परिवर्तन से आशय समाज की सामाजिक संरचना, व्यवहार प्रतिरूपों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा संस्थागत व्यवस्थाओं में होने वाले महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक रूपांतरण से है। जनजातीय समाजों में सामाजिक परिवर्तन सामान्यतः क्रमिक होता है और बाह्य शक्तियों के साथ निरंतर अंतःक्रिया के माध्यम से घटित होता है। आधुनिकीकरण, सांस्कृतिक समन्वय (अक्कल्चरेशन), मुख्यधारा समाज के साथ एकीकरण तथा विकासोन्मुख हस्तक्षेप जैसी प्रक्रियाएँ जनजातीय जीवन को नए रूप में ढालने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। इन प्रक्रियाओं का प्रभाव शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक संगठन, सांस्कृतिक प्रथाओं और सत्ता संरचनाओं पर पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप जनजातीय समुदायों में अनुकूलन के साथ-साथ रूपांतरण भी होता है।

जनजातीय समाज परंपरागत रूप से समुदाय-केंद्रित जीवन पर आधारित विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था से पहचाना जाता रहा है। सुदृढ़ कुटुंबीय और कबीलाई संबंध सामाजिक संगठन और पहचान की आधारशिला होते हैं। जनजातीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः आत्मनिर्भर रही है, जो कृषि, वन-उत्पादों, शिकार और संग्रहण पर निर्भर करती थी। सामाजिक नियंत्रण प्रथागत नियम-कानूनों और पारंपरिक नेतृत्व संस्थाओं के माध्यम से बनाए रखा जाता था। वनों और प्राकृतिक संसाधनों के साथ घनिष्ठ एवं परस्परनिर्भर संबंध जनजातीय आजीविका, संस्कृति और विश्वदृष्टि का केंद्रीय तत्व रहा है। किंतु सामाजिक परिवर्तन ने नई आर्थिक गतिविधियों, सामाजिक मानदंडों और संस्थागत संरचनाओं को प्रस्तुत कर इन पारंपरिक विशेषताओं को क्रमशः चुनौती दी है।

सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक:

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक परस्पर-संबंधित कारक उत्तरदायी रहे हैं। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख माध्यम बनकर उभरी है; विद्यालयों, आवासीय छात्रावासों और साक्षरता कार्यक्रमों के विस्तार से जनजातीय युवाओं में जागरूकता और आकांक्षाएँ बढ़ी हैं। आर्थिक विकास ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें मज़दूरी, खनन गतिविधियाँ, निर्माण कार्य तथा स्थानीय और क्षेत्रीय बाज़ारों में बढ़ती सहभागिता शामिल है। सरकारी नीतियों (जैसे कल्याणकारी योजनाएँ, वनाधिकार कानून और आरक्षण नीतियाँ) ने संसाधनों और अवसरों तक पहुँच को प्रभावित किया है। नगरीकरण और प्रवासन, विशेषकर रोज़गार हेतु समीपवर्ती नगरों की ओर मौसमी प्रवासन, ने जनजातीय समुदायों को शहरी जीवन-शैलियों और मूल्यों से परिचित कराया है। इसके अतिरिक्त, टेलीविजन, मोबाइल फ़ोन और डिजिटल मंचों जैसी संचार तकनीकों ने मुख्यधारा संस्कृति और सूचनाओं के संपर्क को बढ़ाया है, जिससे सामाजिक परिवर्तन की गति तेज हुई है।

आर्थिक जीवन में परिवर्तन:

परंपरागत रूप से जनजातीय समुदायों का आर्थिक जीवन आत्मनिर्भर कृषि, वन-उत्पाद संग्रह, शिकार और संग्रहण पर आधारित था। समय के साथ यह आर्थिक संरचना उल्लेखनीय रूप से विविधीकृत हुई है। अनेक जनजातीय परिवार अब कृषि, निर्माण, खनन और अन्य अनौपचारिक क्षेत्रों में मज़दूरी कार्यों में संलग्न हो गए हैं। पर्यावरणीय क्षरण, वनों की कटाई और वन संसाधनों तक पहुँच पर नियामक प्रतिबंधों के कारण वनों पर निर्भरता में कमी आई है। सरकारी रोज़गार और आजीविका योजनाओं में भागीदारी बढ़ी है, जिससे आय-सृजन के अवसर प्राप्त हुए हैं। वस्तु-विनिमय प्रणालियों के स्थान पर नकद-आधारित अर्थव्यवस्था के क्रमिक विस्तार ने आर्थिक संबंधों को और अधिक रूपांतरित किया है। यद्यपि इन परिवर्तनों से आय के अवसर और बाज़ार सहभागिता बढ़ी है, फिर भी इससे आर्थिक असुरक्षा तथा अस्थिर मज़दूरी-आधारित रोज़गार पर निर्भरता भी बढ़ी है।

शिक्षा और जागरूकता में परिवर्तन:

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक शिक्षा बनकर उभरी है। विद्यालयों, आवासीय छात्रावासों तथा छात्रवृत्ति कार्यक्रमों के विस्तार के कारण विशेष रूप से जनजातीय बच्चों और युवाओं में साक्षरता स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। माध्यमिक और उच्च शिक्षा में भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी सेवाओं और निजी क्षेत्र में रोज़गार की आकांक्षाएँ सुदृढ़ हुई हैं। शिक्षा के माध्यम से कानूनी अधिकारों, स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों, सामाजिक कल्याण योजनाओं और राजनीतिक सहभागिता के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। तथापि, इन प्रगतियों के बावजूद उच्च ड्रॉप-आउट दर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच और शैक्षिक असमानता जैसी समस्याएँ अब भी जनजातीय आबादी के बड़े वर्ग को प्रभावित कर रही हैं।

पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना का रूपांतरण

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया ने जनजातीय समुदायों की पारिवारिक व्यवस्था और सामाजिक संबंधों को गहराई से प्रभावित किया है। शिक्षा और रोज़गार के लिए प्रवासन के कारण विस्तारित एवं संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवार व्यवस्था कीओर क्रमिक परिवर्तन देखने को मिलता है। लैंगिक भूमिकाओं में भी परिवर्तन स्पष्ट है, क्योंकि शिक्षा और आय-सृजन गतिविधियों तक बढ़ी पहुँच ने महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक भागीदारी को सशक्त किया है। इसके साथ-साथ बुज़ुर्गों और पारंपरिक जनजातीय परिषदों का परंपरागत अधिकार कमजोर हुआ है तथा विवाह, व्यवसाय और जीवन-शैली से जुड़े निर्णयों में व्यक्तियों की स्वायत्तता बढ़ी है। इन संरचनात्मक परिवर्तनों के बावजूद कुटुंबीय संबंध, कबीलाई जुड़ाव और सामुदायिक पहचान की भावना जनजातीय सामाजिक जीवन में आज भी महत्वपूर्ण बनी हुई है।

सांस्कृतिक परिवर्तन और परंपरा

बिलासपुर की जनजातीय समुदायों का सांस्कृतिक जीवन आधुनिकीकरण और मुख्यधारा समाज के साथ बढ़ती अंतःक्रिया के प्रभाव में उल्लेखनीय रूप से परिवर्तित हुआ है। पारंपरिक पर्व-त्योहार, नृत्य, अनुष्ठान और मौखिक परंपराएँ सामुदायिक सहभागिता में कमी और बदलती प्राथमिकताओं के कारण दैनिक जीवन में कम होती जा रही हैं। मुख्यधारा की धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं का

प्रभाव जनजातीय रीति-रिवाजों पर बढ़ा है। वस्त्र-शैली, खान-पान की आदतों और भाषा-प्रयोग में आए परिवर्तन भी इस सांस्कृतिक अंतःक्रिया को दर्शाते हैं। साथ ही, जनजातीय उत्सवों, सांस्कृतिक संगठनों और सरकारी सहयोग से संचालित कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रयास यह संकेत देते हैं कि परिवर्तन के बीच अपनी विरासत को संरक्षित और पुनर्व्याख्यायित करने की चेतना भी विद्यमान है। ये सभी प्रवृत्तियाँ सांस्कृतिक क्षरण के साथ-साथ सांस्कृतिक अनुकूलन को भी दर्शाती हैं।

सामाजिक संस्थाओं पर प्रभाव:

ग्राम परिषदों, कबीलाई नेतृत्व संरचनाओं और प्रथागत कानूनों जैसी पारंपरिक सामाजिक संस्थाएँ औपचारिक प्रशासनिक व्यवस्थाओं और आधुनिक कानूनी ढाँचों के विस्तार के कारण कमजोर हुई हैं। शासन और विवाद-निवारण की प्रक्रियाएँ अब परंपरागत संस्थाओं के स्थान पर राज्य की औपचारिक संस्थाओं द्वारा संचालित की जा रही हैं। इसके साथ ही, पंचायती राज संस्थाओं और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जनजातीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी बढ़ी है, जिससे नेतृत्व के नए स्वरूप और राजनीतिक सहभागिता का विकास हुआ है। इस परिवर्तन ने राजनीतिक जागरूकता और प्रतिनिधित्व को सुदृढ़ किया है, किंतु पारंपरिक संस्थागत आधार को भी परिवर्तित किया है।

निष्कर्ष:

बिलासपुर ज़िले की जनजातीय समुदायों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया किसी आकस्मिक परंपरा-विच्छेद के बजाय क्रमिक, जटिल और संक्रमणकालीन रूपांतरण को प्रतिबिंबितकरती है। शिक्षा तक बढ़ी पहुँच, आर्थिक अवसरों का विस्तार, सरकारी कल्याण नीतियाँ, शहरी संपर्क और जनसंचार माध्यमों के प्रभाव ने सामूहिक रूप से जनजातीय सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को पुनःआकार दिया है। पारंपरिक आत्मनिर्भर आजीविकाएँ और समुदाय-केंद्रित सामाजिक संरचनाएँ धीरे-धीरे मज़दूरी, नकद-आधारित आर्थिक संबंधों और व्यक्तिगत निर्णय-निर्माण से प्रतिस्थापित हो रही हैं, विशेषकर युवा पीढ़ी में। पारिवारिक संरचनाएँ एकल रूपों की ओर बढ़ी हैं, लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन के संकेत मिले हैं और औपचारिक शासन तथा कानूनी व्यवस्थाओं के प्रभाव से पारंपरिक संस्थाओं का अधिकार कमजोर हुआ है। इसके बावजूद जनजातीय समुदायों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को पूर्णतः त्यागा नहीं है; कुटुंबीय संबंध, सामुदायिक एकजुटता और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास आज भी सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। इस प्रकार, बिलासपुर की जनजातीय समाज-व्यवस्था में सामाजिक परिवर्तन परंपरा और आधुनिकता के सहअस्तित्व का रूप प्रस्तुत करता है, जहाँ अनुकूलन और प्रतिरोध दोनों प्रक्रियाएँ एक साथ सक्रिय हैं। यद्यपि विकास और आधुनिकीकरण से जीवन-स्तर, जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता में सुधार हुआ है, परंतु सांस्कृतिक क्षरण, आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक असमानता जैसी चिंताएँ भी उत्पन्न हुई हैं। अतः अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने के साथ-साथ जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान, परंपराओं और सामूहिक मूल्यों की रक्षा हेतु समावेशी एवं सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील विकास दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।

संदर्भ:

1. *Beteille, A. (1996). Caste, class, and power: Changing patterns of stratification in a Tanjore village. Oxford University Press.*
2. *Bose, A. (2001). India's urbanization and socio-economic transformation. Population Reference Bureau.*
   https://www.prb.org
3. *Census of India. (2011). District census handbook: Bilaspur, Chhattisgarh. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.*
   https://censusindia.gov.in
4. *Desai, A. R. (2005). Rural sociology in India. Popular Prakashan.*
5. *Elumalai, D., & Selvakumar, S. D. (2019). A study on awareness of fundamental rights among undergraduate learners. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 6(45), 10856–10863.*
   https://www.srjis.com

6. *Guria, N. N. (2018). Social effects of poor sanitation and waste management on Bilaspur city. International Journal of Geography and Geology, 7(2), 45–52.*
7. *Kundu, A. (2006). Trends and processes of urbanisation in India. India Infrastructure Report, 27–44.*
8. *Majumdar, D. N., & Madan, T. N. (1967). An introduction to social anthropology. Asia Publishing House.*
9. *Rao, M. S. A. (2006). Social change in urban India. Orient BlackSwan.*
10. *Sharma, K. L. (2013). Indian social structure and change. Rawat Publications.*
11. *Sharma, V., & Singh, R. (2017). Prevalence of metabolic syndrome and socio-demographic factors in Bilaspur, Central India. European Journal of Cardiovascular Medicine, 7(4), 215–222.*
12. *Singh, K. S. (1994). The scheduled tribes. Oxford University Press.*
13. *Singh, Y. (2007). Modernization of Indian tradition. Rawat Publications.*
14. *Sinha, S. (1965). Tribes in India. Prentice Hall.*
15. *State Council for Science, Technology & Environment. (2020). SCSTRTI report on tribal development in Chhattisgarh. Government of Chhattisgarh. https://repository.tribal.gov.in*
16. *Yadav, R. S. (2015). Impact of urbanization on Baiga tribe of Bilaspur district. International Journal of Social Sciences and Humanities, 3(1), 89–96. https://www.academia.edu*